असम वैली स्कूल

हिंदी विभाग त्रैमासिक पत्रिका

उड़ान

अभिव्यक्ति की....

सत्रांक – अक्टूबर 2021

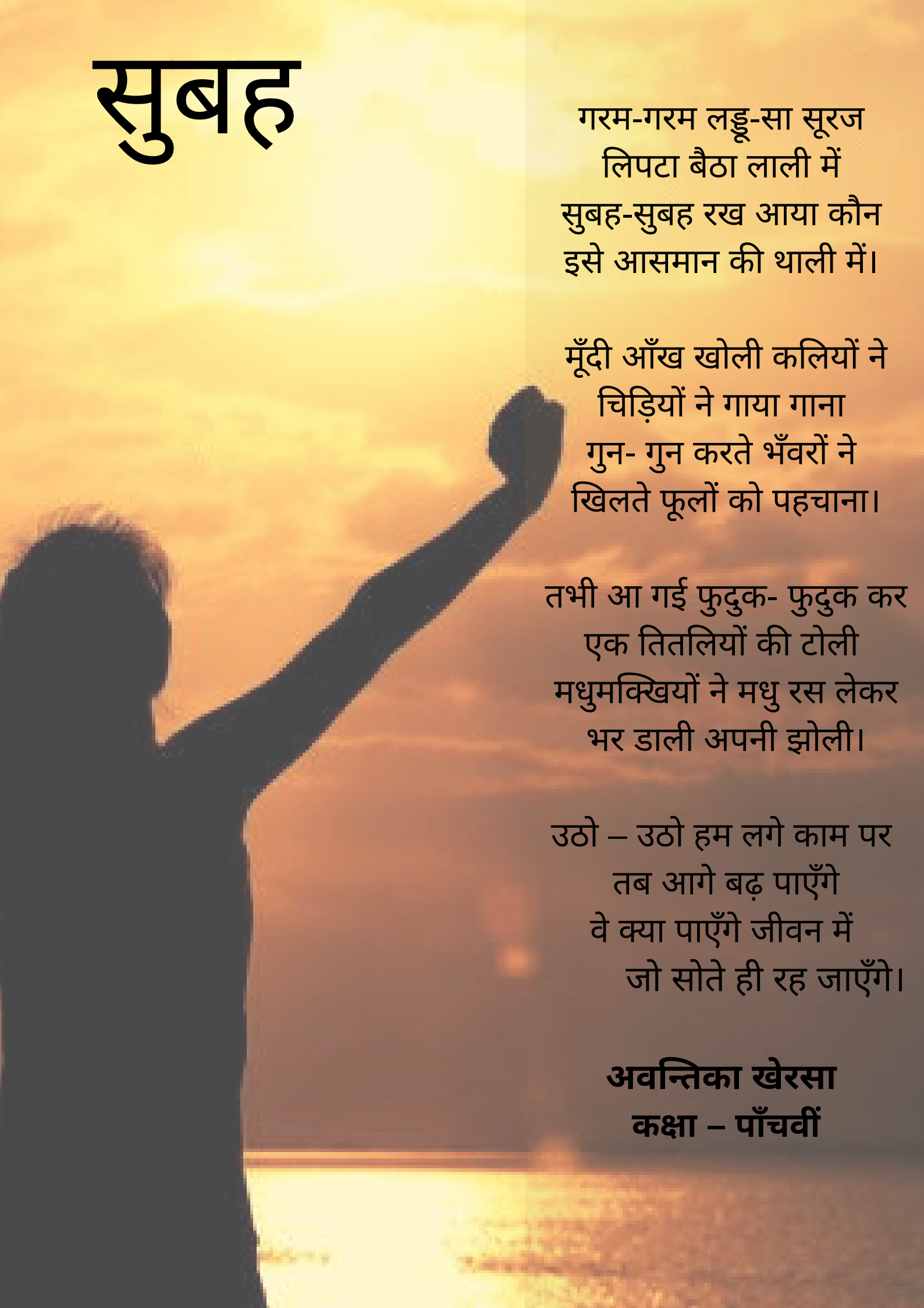

सुबह

गरम-गरम लड्डू-सा सूरज
लिपटा बैठा लाली में
सुबह-सुबह रख आया कौन
इसे आसमान की थाली में।

मूँदी आँख खोली कलियों ने
चिड़ियों ने गाया गाना
गुन- गुन करते भँवरों ने
खिलते फूलों को पहचाना।

तभी आ गई फुदुक- फुदुक कर
एक तितलियों की टोली
मधुमक्खियों ने मधु रस लेकर
भर डाली अपनी झोली।

उठो – उठो हम लगे काम पर
तब आगे बढ़ पाएँगे
वे क्या पाएँगे जीवन में
जो सोते ही रह जाएँगे।

अवन्तिका खेरसा
कक्षा – पाँचवीं

ज्ञान का दीपक

ज्ञान का दीपक वे जलाते हैं,
माता- पिता के बाद वे आते हैं।
माता देती है हम सबको जीवन,
पिता करते हैं हमारी सुरक्षा,
लेकिन जो जीवन को सजाते हैं,
वही हमारे शिक्षक कहलाते हैं।

शिक्षक बिना न ज्ञान है,
शिक्षक बिना न मान है,
हमारा जीवन सफल बनाते हैं,
ज्ञान का दीपक वे जलाते हैं।

जीवन- संघर्षों से लड़ना और उबरना,
शिक्षक ही हमें सिखाते हैं ,
ज्ञान का दीपक वे जलाते हैं,
माता-पिता के बाद वे ही आते हैं।

आदित्य अग्रवाल
कक्षा – आठवीं

धरती

धरती अपनी माता है
इससे गहरा नाता है।
धरती पर हम जन्मे हैं
इसका अंश सबमें है।
यह हरियाली देती है
बदले में कुछ न लेती है।
हम सब इसका ध्यान रखें
इसका कुछ सम्मान करें।
इससे सब कुछ मिलता है
जीवन इस पर खिलता है।
बहती हवा सुहानी है
इसका निर्मल पानी है।
खेतों में अन्न उगाती है
सबका पेट भराती है।
धरती का सम्मान करो
इसकी सेहत का ध्यान रखो।

चेन्मई चैंग
कक्षा - सातवीं

कोरोना

हाय ! यह है आज की दुनिया का रोना।
लगता है कर दिया किसी ने जादू-टोना।
घड़ी-घड़ी पड़ता है हाथों को धोना।
दूभर हो गया है अपने मित्रों को छूना।

विज्ञान भी हुआ है इसके सामने बौना।
इंसान बना कुदरत का खिलौना।
नहीं भाता मृत्यु और पीड़ा का तांडव होना।
सरकार की यह गुहार सभी लोग घर पर ही रहो ना।

लोगों कुछ तो अपने लिए करो ना।
हाय यह करोना ! हाय यह करोना !
और कितने लोगों को होगा हमें खोना।
कितनों के लिए पड़ेगा रोना।

प्रभु, अब बहुत हुआ,
इन सभी कष्टों को ढोना।
पीड़ा से कराह रहे सभी
कृपा करके, हमारे दु:खों को हरो ना ।

सिद्धांत सिंह
कक्षा - सातवीं

कोयल

पात पुरवा से जब झड़ जाते
निकल नए पत्ते तब आते
हरी-भरी डाली के ऊपर
बैठी कोयल गाती है –
कुहू – कुहू – कुहू – कुहू ।

कोयल तन की काली है
पर मन की मतवाली है
हरे-भरे पत्तों में छिपकर
मीठे बोल सुनाती है –
कुहू – कुहू – कुहू – कुहू ।

इस फुनगी से उस फुनगी तक
तेजी से उड़ जाती फर-फर
नकल करो उसकी बोली की
वह फिर-फिर दोहराती है
कुहू – कुहू – कुहू – कुहू ।

डेलिशा मोदगिल
कक्षा - छठवीं

मेरी थाईलैंड यात्रा

जब मैं तीसरी कक्षा में पढ़ती थी तब मेरे माता और पिता ने मुझे थाईलैंड घुमाने का सरप्राइज़ दिया था। उस समय मैं बहुत ज्यादा खुश थी क्योंकि यह मेरी पहली अंतर्राष्ट्रीय यात्रा थी। हमने दिसम्बर के महीने में जाना तय किया। नवम्बर के अंत में हम लोग कोलकाता आ गए। वहाँ पर हम लोग दो-तीन दिन नानी के घर रुके। फिर हम लोग कोलकाता हवाई अड्डे पर पहुँचे। कोलकाता हवाई अड्डे से हमने थाईलैण्ड जाने वाले हवाई जहाज में अपना-अपना स्थान ग्रहण किया।

मैं पहली बार अपने परिवार के साथ किसी विदेश यात्रा पर जा रही थी। लगभग तीन घंटे की हवाई यात्रा के बाद हम लोग बैकांक पहुँच गए। जैसे ही हम बैकांक हवाई अड्डे पर उतरे, वहाँ के खूबसूरत नजारों ने हम सबका मन मोह लिया। पिता जी ने एक गाड़ी रिजर्व की। हम सभी गाड़ी में बैठकर पटाया के लिए चल दिए। पटाया एक बहुत ही सुंदर जगह है। वहाँ हम सभी ने होटल में आराम किया। अगले दिन हम लोग समुद्र तट का नज़ारा देखने पहुँच गए। वहाँ पर हम सब लोगों ने बहुत मस्ती की। समुद्र के किनारे बहुत से खेल भी खेले।

पूरा दिन कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। वहाँ पर हमने विभिन्न प्रकार के पकवान भी खाये। वहाँ के लोगों की विनम्रता भरी बात-चीत बहुत अच्छी लगी। किसी भी काम को करने का तरीका भी अलग था। लोगों के पहनावे और खान-पान भी अलग थे। शाम के समय समुद्र के किनारे सूरज का डूबना बहुत ही अच्छा लग रहा था। सूर्यास्त देखने के लिए वहाँ पर बहुत लोगों की भीड़ जुटती है। अब अंधेरा होने लगा था। हम सब लोग गाड़ी में बैठकर बैकांक वापस आ गए।

बैकांक में भी हम लोग बहुत जगह घूमने गए। वहाँ हम लोग वॉटर पार्क, सफारी पार्क भी गए। सफारी में बहुत से जंगली जानवर दिखाई पड़े। कुछ ऐसे जानवर भी थे जिन्हें हमने पहली बार देखा। हम लोगों की थाईलैंड यात्रा पूरी हुई। हम लोगों का यह सफ़र बहुत ही यादगार रहा। बहुत मस्ती और आनंद के साथ यह यात्रा पूरी हुई। अब हम सब अपने प्रिय देश भारत लौटने के लिए तैयार थे। बैकांक हवाई अड्डे से भारत के लिए उड़ान भरने के बाद हम सब कुछ ही घंटों की यात्रा के बाद अपने देश पहुँच गए।

मनस्वी अग्रवाल
कक्षा - दसवीं

सेवा की महिमा

एक भिखारी सुबह-सुबह भीख माँगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल लिए। उसे यह विश्वास था कि भिक्षा माँगने के लिए निकलते समय अपनी झोली को खाली नहीं रखनी चाहिए। थैली में रखा कुछ देखकर दूसरों को भी लगता है कि इसे पहले से भी किसी ने कुछ दे रखा है।

पूर्णिमा का दिन था। भिखारी सोच रहा था कि आज अगर ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। अचानक भिखारी को सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती हुई दिखाई दी।

भिखारी राजा की सवारी को देखकर खुश हो गया। उसने सोचा कि राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से आज उसकी दरिद्रता दूर हो जाएगी और उसका जीवन अच्छा हो जाएगा। जैसे-जैसे राजा की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। जब राजा का रथ भिखारी के निकट आया, तब राजा ने अपना रथ रुकवाया और रथ से उतरकर भिखारी के पास पहुँचे। राजा को अपने पास देखकर भिखारी की तो मानो साँसें रुकने लगीं। राजा ने उसे कुछ देने के बदले उल्टे अपनी बहुमूल्य चादर उस भिखारी के सामने फैला दी और उससे सेवा करने को कहने लगे। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। राजा ने उससे फिर कहा कि वह सेवा करे। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला मगर हमेशा दूसरों से लेने वाला मन देने को राजी नहीं हो रहा था।

जैसे-तैसे करके उसने दो दाने जौ के निकाले और राजा की चादर में डाल दिए। उस दिन हालाँकि भिखारी को अधिक भीख मिली, लेकिन अपनी झोली में से दो दाने जौ के देने का मलाल उसे सारा दिन रहा। शाम को जब उसने अपनी झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह अपने साथ झोली में ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे।

अब उसे समझ में आया कि यह सेवा की महिमा के कारण हुआ है। वह पछताया कि काश ! उस समय उसने राजा को और अधिक जौ दिए होते लेकिन दे नहीं सका, क्योंकि उसकी देने की आदत जो नहीं थी।

यसाश्री टिबरीवाल
कक्षा - दसवीं
(संकलित)

हृदय परिवर्तन

मोहनदास, जो कि एक सेवानिवृत शिक्षक थे, अपने परिवार के साथ शहर से कुछ दूर गाँव में रहते थे । उम्र के इस पड़ाव में भी वे अपने आप को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए अपना काम स्वयं ही करते थे। गाँव के सभी बच्चों को वे शिक्षा और आदर्श की बात सिखाते थे । उनके इस गुण के कारण सभी लोग उनका बहुत आदर करते थे।

एक रात मोहनदास को खबर मिली कि शहर में उनके किसी परिजन की तबीयत खराब है और उनका वहाँ पहुँचना अत्यंत आवश्यक है। फिर क्या था मोहनदास ने उसी समय, रात में ही शहर जाने का निश्चय किया । रात का समय होने के कारण उस समय बस, कार या अन्य साधन उपलब्ध न हो सके । मोहनदास ने उस समय कोई साधन न मिलने की दशा में अपनी साइकिल उठाई और शहर की ओर रवाना हो गए । ठंड का मौसम था और आधी रात का समय, वे अपनी साइकिल से ठंड में ठिठुरते हुए जा रहे थे । तभी अचानक सड़क के एक ओर से आवाज़ आई, "मेरी मदद करो , मेरी मदद करो------- कोई मेरी मदद करो----। " मोहनदास ने देखा कि एक आदमी जो कि बीमार है और बहुत ही असहाय दिख रहा था । वह सड़क के किनारे बैठा रो रहा था । मोहनदास को देखते ही वह आदमी बोला, "आप मेरी मदद कीजिए --- मैं बीमार हूँ और भूखा प्यासा भी हूँ -------मेरी मदद कीजिए ----- मानवता के नाम पर कृपया मेरी मदद कीजिए।" मोहनदास जो कि एक दयालु और परोपकारी व्यक्ति थे, उन्होंने तुरंत उस आदमी की सहायता करने का फैसला किया । वे जैसे ही अपनी साइकिल पर टंगे झोले में से उसको देने के लिए कुछ निकालने लगे । तभी वह आदमी अचानक से चाकू लेकर उनके पीछे आ गया । मोहनदास कुछ सँभलते इससे पहले ही उस आदमी ने उन्हें ज़ोर से पकड़ लिया और चाकू के बल पर उनके सारे पैसे लूट लिए और वह उनकी साइकिल लेकर भागने लगा, तब मोहनदास ने उससे प्यार से बोला कि तुमने बीमार और असहाय बनकर मुझे लूटा है परंतु ये बात तुम किसी से न कहना अन्यथा लोगों का इंसानियत से विश्वास उठ जाएगा और लोग किसी भी असहाय की सहायता करना छोड़ देंगे । उनकी इस बात को सुनकर वह चोर रुक गया और उसका हृदय परिवर्तन हो गया। उसे अपने किए पर पश्चाताप होने लगा , वह उनसे माफी माँगने लगा और उसने कभी भी भविष्य में चोरी न करने का प्रण कर लिया ।

विशाल देवनाथ
कक्षा – नवमीं

बड़ी सोच रखने वाला

एक राजा था। वह बचपन से ही अंधा था। राजा के तीन पुत्र थे। एक दिन राजा सोचने लगा कि उनके बाद कौन-से पुत्र को राजा बनाना चाहिए। बहुत सोच-विचार करने के बाद राजा ने यह निर्णय लिया कि वह अपने तीनों पुत्रों की परीक्षा लेंगे। दूसरे दिन राजा ने अपने तीनों पुत्रों को बुलाया और उन्हें तीन थैलियाँ दीं। राजा ने कहा कि इन थैलियों में कुछ खास चीजें हैं। तुम लोग एक महीने बाद मुझे बताओ कि इन थैलियों से तुम्हें क्या मिला।

राजा के तीनों पुत्र बहुत खुश हुए। तीनों भाई बहुत खुशी से अपनी-अपनी थैलियाँ लेकर अपने कमरे में चले गए। अब अपने कमरे में जाकर सभी भाइयों ने अपनी-अपनी थैलियाँ खोलीं। पहले पुत्र को अपनी थैली में कुछ बीज और फल मिले। थैली में एक चिट्ठी भी मिली। उसमें लिखा था कि ईमानदारी से इस्तेमाल करना। दूसरे और तीसरे पुत्र को भी थैली में वही चीज मिली। पहले बेटे ने वह फल खुद खा लिया क्योंकि उसे भूख लग रही थी। जो बीज उसे थैली में मिले उन बीजों को उसने बेच दिया। दूसरे पुत्र ने कुछ फल खुद खा लिए और कुछ जानवरों को खिला दिया और अपने बड़े भाई की तरह बीज बेच दिए। तीसरे बेटे ने फल लोगों को बाँट दिया और बीजों को अपने बगीचे में लगा दिया। एक महीने बाद कुछ छोटे पौधे उग गए।

इधर एक महीने का समय बीत चुका था। अब राजा ने अपने पुत्रों को बुलाया और पूछा कि उन्होंने उस थैली से निकली वस्तुओं का क्या किया? राजा के तीनों पुत्रों ने अपनी-अपनी कहानी बतायी। राजा अपने सभी पुत्रों की कहानी सुनने के बाद इस निर्णय पर पहुँच गए कि उसे अपना उत्तराधिकारी किस पुत्र को बनाना है ? राजा ने अपने सभी दरबारियों को दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया। राजा ने अपने तीसरे पुत्र को राजा बनाने की घोषणा की। राजा के अन्य दो पुत्र सोच में पड़ गए कि उनसे कहाँ गलती हो गई ? तब राजा ने उन दोनों को अपने पास बुलाया। राजा ने कहा कि तुम दोनों लोगों ने सिर्फ़ अपने बारे में सोचा, अपना लाभ देखा। तुम दोनों ने सिर्फ़ एक दिन के बारे में सोचा पर तुम्हारे सबसे छोटे भाई ने पहले दूसरे के बारे में सोचा और सिर्फ़ एक दिन नहीं बल्कि आने वाले दिनों के बारे में भी सोचा। उसमें दूरदृष्टि है। वह वर्तमान, भूत और भविष्य के बारे में सोचने की क्षमता रखता है। वह एक प्रजा-पालक भावना रखता है। वह अपने कल्याण के विषय में कम और दूसरों के विषय में अधिक सोचता है। उसमें एक राजा होने के सभी गुण हैं।

अहोना चौधरी
कक्षा - आठवीं

महाभारत के 59 पात्र खोजिए

दिशा संकेत : → ↓ ↘ ↙

वि	दुः	ए	क	ल	व्य	भी	ष्म	शि	ख	ण्डी	यु
रा	क	शा	ल्व	अ	भि	म	न्यु	रु	क्मी	रो	धि
ट	न्त	र्ण	स	र्जु	श	ल्य	गं	गा	क्मि	हि	ष्ठि
नु	•	शि	त्य	न	कु	ल	हि	न्धा	अ	णी	र
द्व	कृ	शु	व	द्रो	नि	न्ती	डि	री	म्बि	द्रौ	कृ
प	ष्ण	पा	ती	णा	व	अ	म्बा	लि	का	प	पी
द	ण्डु	ल	चा	चा	सु	भ	द्रा	सं	धृ	दी	उ
वि	चि	त्र	वी	र्य	दे	घ	अ	ज	त	त्त	ग्र
दु	त्रां	स	ह	दे	व	टो	श्व	य	रा	कं	से
र	ग	सा	त्य	कि	की	त्क	त्था	द्र	ष्ट्र	स	न
वे	द	व्या	स	य	क्ष	च	मा	थ	मा	द्री	न्ध
दु	र्यो	ध	न	ब	र्ब	री	क	ब	ल	रा	म

प्रिय पाठकगण,
आप उपर्युक्त तालिका में से महाभारत के 59 पात्रों के नाम खोजकर, समस्त नाम पत्रिका प्रकाशक को अपना नाम और पते के साथ भेज सकते हैं। पहले पाँच प्रेषकों के नाम पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

साभार – गूगल

अंतर ढूंढिए....

Chill Out

पांच अंतर ढूंढ़िए

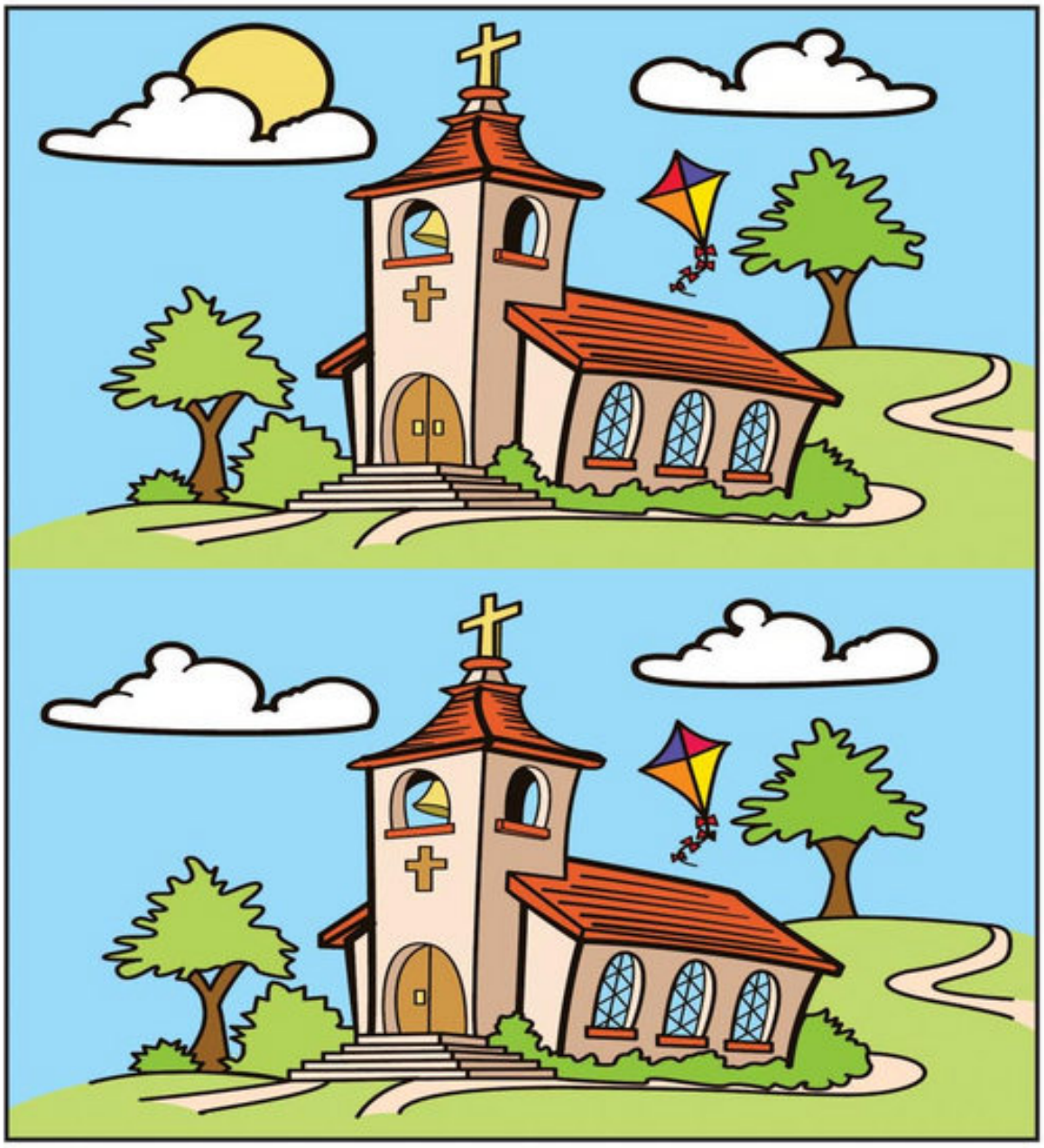

साभार – गूगल

संपादकीय मण्डल

मुख्य संपादक : आरव जैन

सहायक संपादक मण्डल : आकांक्षित शर्मा

आवरण पृष्ठ सज्जा : अनुष्का जोशी

पृष्ठ सज्जा : आकांक्षित शर्मा

पृष्ठभूमि छायाचित्र : गूगल एवं कैनवा

फोटोग्राफ : ए.वी.एस. फोटोग्राफी सोसायटी

संकलनकर्ता : आदित्य कुमार उपाध्याय

शिक्षक मण्डल : समस्त हिंदी विभाग

मार्गदर्शक : डॉ. विधुकेश विमल

संपादकीय पता

दि असम वैली स्कूल

बालीपारा, सोनितपुर

असम - 784101

अस्वीकरण:- उड़ान पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएँ विद्यार्थियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हैं। विद्यालय, विद्यार्थियों की निजी अभिवयक्ति के प्रति तटस्थ भाव रखता है।